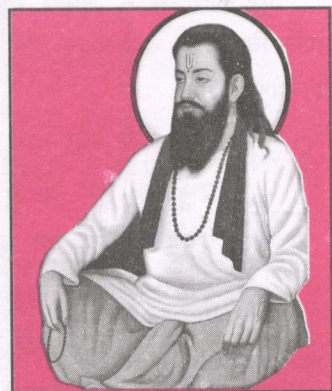


27. गुरु रविदास

-डॉ० पीयूष गुलेरी

हमारा भारत देशल्लों, महात्माओं, सिद्धों, फकीरों, भक्तों और ज्ञानियों का देश है। हिन्दी साहित्य के भक्ति के संत कवियों में गुरु रविदास का महत्वपूर्ण स्थान है। उनका नाम बड़े आदर और सम्मान से स्मरण किया जाता है। गुरु रविदास रैदास के नाम से भी जाने जाते हैं। रैदास ऐसे विरले महानुभावों में से एक हैं जो कुल अथवा जाति के बन्धनों को तोड़कर अपने पशुधर्म, तप, त्याग और उत्सर्ग के गुणों से मानव जाति के लिए पून्य बन जाते हैं। इसीलिए संत रैदास गुरु रविदास के रूप में भी जाने जाते हैं।



गुरु रविदास का समय संवत् 1455-1575 के आसपास माना जाता है। अन्तः साक्ष्य के आधार पर इनका जन्म दलित जाति में होना सिद्ध होता है। गुरु रविदास काशी के निवासी थे। इन्हें रामानन्द जी का शिष्य माना जाता है। कतिपय विद्वानों का मत है कि चित्तौड़ की रानी मीराँ बाई ने रैदास का शिष्यत्व ग्रहण किया था। मीराँ बाई ने भी अपने अनेक पदों में संत रविदास जी का गुरु रूप में स्मरण किया है। यथा-

गुरु रैदास मिले मोहि पूरे, धुर से कलम भिड़ी।

सत गुरु सैन दईजब आके, जोत रली॥

गुरु रविदास बहुल और बहुश्रुत थे। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती और समसामयिक भक्तों के सम्बन्ध में भी जमकर लिखा है। उन्हीं के एक आलेख से ज्ञात होता है कि महात्मा कबीर का गोलोक-गमन उनके सामने हो गया था। संत रैदास की अवस्था 120 वर्ष मानी जाती है। गुरु रविदास अनपढ़ कहे जाते हैं। किन्तु थे वह सिद्ध सन्त। संतमत के विभिन्न संकलनों में उनकी रचनाएँ संकलित मिलती हैं। रैदास की रचनाओं का संग्रह बेलवेडियर प्रैस प्रयाग से प्रकाशित हो चुका है। इनके बहुत से पद 'गुरु ग्रंथ साहिब' में भी संग्रहीत मिलते हैं।

गुरु रविदास की विचारधारा संतमत के अनुरूप है। उनका सत्यपूर्ण ज्ञान में अडिग विश्वास था। उन्होंने भक्ति के लिए परम वैराग्य का होना अनिवार्य माना है। 'परम तत्त्व' को सत्य और अनिर्वचनीय कहा है :-

जस हरि कहिये तस हरि नहीं।

है अस जस कुछ तैसा।

गुरु रविदास जड़ और चेतन में परमेश्वर का निवास मानते हैं। वह 'परम तत्त्व' अक्षय और अनश्वर है, तथा जीवात्मा के रूप में प्रत्येक जीव में अवस्थित है। विद्वानों का ऐसा मत है कि गुरु रविदास अष्टांग योग साधना पद्धति में विश्वास रखते थे।

गुरु रविदास अपने समय के अत्यंत लाकाप्रिय और सुप्रासिद्ध महात्मा थे। महात्मा कबीर ने- 'संतन में रविदास संत' कहकर उनका लोहा माना है। यह नहीं नाभादास, प्रियादास तथा मीराँ बाई आदि भक्तों ने भी गुरु रविदास का ससम्मान स्मरण किया है। गुरु रविदास ने एक पंथ भी चलाया जो 'रैदास पंथ' के नाम से प्रसिद्ध है।

गुरु रविदास ने अपनी रचनाओं में भगवद् भक्ति और मानव प्रेम का सहज और सुन्दर वर्णन किया है। बड़ीसरल और सादी भाषा में 'परमतत्त्व' की व्याख्या करने में तो वे सिद्ध हस्त थे। यथा :

अब कैसे छूटे नाम रट लागी, अब कैसे छूटे नाम रट लागी।

प्रभु जी, तुम चन्दन हम पानी, जाकी अंग-अंग वास समानी।।।

प्रभु जी, तुम घन वन, हम मोरा, जैसे चिवत चन्द चकोरा।

प्रभु जी, तुम दीपक हम बाती, जाकी जोत जैरे दिन राती।।

प्रभु जी, तुम मोती हम धागा, जैसे सोनही मिलत सोहागा।

प्रभु जी, तुम स्वामी हम दासा, ऐसी भक्ति करै रैदासा।।

* अभ्यास *

1. संत रविदास किस युग में अवतरित हुए थे ?
2. संत रविदास अपने समय के महत्त्वपूर्ण संत क्यों माने जाते हैं ?
3. संत रविदास परम तत्त्व की व्याख्या किस रूप में करते हैं ?
4. महात्मा कबीर किन शब्दों में संत रविदास का लोहा मानते हैं ?
5. गुरु रविदास को किन-किन भक्त कवियों ने स्मरण किया है ?
6. गुरु रविदास के पद को अपने शब्दों में व्याख्या कीजिए।

